International Referred Reseach Journal,January,2011,ISSN-0975-3486,RNI: RAJBIL 2009/300097,VOL-II,*ISSUE-16

शोध पत्र- राजनीति विज्ञान

वर्तमान समय में गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता

* संदीप कुमार

* अस्टिनेट प्रोफेसर, राजकीय कॉलेज, होशियारपुर,पंजाब

January 2011

वर्तमान समय में शांति विश्व की प्रथम आवश्यकता है । संसार में दो विश्व युद्धों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मानव का कल्याण युद्ध से नहीं हो सकता, अपितु शांति से ही संभव है।परंतु आज के समय में मनुष्य की अपेक्षा राज्य अधिक महत्वपूर्ण हो गया है । अतः राज्यों को आपसी मतभेद व युद्धों के कारणों को दूर करके समझौतों की राह पकड़ कर शांति आन्दोलनों को समर्थन देना होगा ।

इसी संदर्भ में गांधी जी को शांतिवादियों की दृष्टि से विश्व में अग्रगण्य कहा जा सकता है । गांधी जी के समय में विश्व दो खेमों में विभक्त था। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में तीसरी शक्ति संभव नहीं थी। लेकिन गांधी दर्शन से शांति की एक तीसरी शक्ति का जो अश्युदय हो रहा था वस्तुतः वह अहिंसा व विश्वप्रेम की बुनियाद पर ही संभव है। गांधी जी के विचारों के आलोक में विश्व शांति का स्वप्न साकार हो सकता है। विश्व शांति की स्थापना के लिए विश्व की बड़ी शक्तियों द्वारा युद्ध व उसके साथ जुड़े विश्वासघात और धोखे की क्षमता में विश्वास को छोड़ना होगा तथा सम्पूर्ण विश्व जो निःशस्त्रीकरण का मार्ग अपनाकर सभी की भलाई के लिए विश्व के साधनों को जुटाना सुनिश्चित करना होगा । गांधी दर्शन शांतिपूर्ण प्रयासों से विश्व को शांति के एक मंच पर लाने का प्रयास करता है ।

विश्व में स्थायी शांति और न्याय की आवश्यकता है । गांधी जी द्वारा प्रतिपादित विकल्प ही एक मात्र विकल्प है । सत्याग्रह न केवल युद्ध के समान प्रबल प्रभावशाली साधन है बल्कि उससे निश्चय ही श्रेष्ठ है। युद्ध में भौतिक शक्ति का चरम प्रयोग किया जाता है जिसकी अंतिम परिणति चरम विनाश है वहीं गांधी जी के सत्याग्रह में नैतिक शक्ति का प्रयोग किया गया है, जिसमें विनाश का कोई भाव नहीं होता । युद्ध दूसरों को पीड़ा पहुंचाता है जबकि सत्याग्रह आत्मपीड़न द्वारा अभिव्यक्त होता है । युद्ध शक्ति को न्याय मानता है जबकि सत्याग्रह विवेक के लिए आग्रह करता है । युद्ध से क्रोध, घृणा और प्रतिशोध को जन्म मिलता है जबकि सत्याग्रह से प्रेम ,करूणा और भ्रातृभाव का उदय होता है । युद्ध अपने पीछे कड़वाहट व भावी युद्धों के बीज छोड़ जाता है जबकि गांधी जी का सत्याग्रह ऐसा कुछ भी नहीं करता है और उसके बाद स्थायी शांति व्याप्त होती है। सत्याग्रह के गुणों को एकत्रित करते हुए गांधी जी ने कहा था कि यह एक बहुधारी तलवार है जिसे किसी भी प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है। बिना हिंसा व एक बूंद रक्त के गिराये यह बहुत दूर तक साथ देने वाला प्रतिफल उत्पन्न करती है । भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध गांधी जी ने अहिंसा व सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया । उन्होंने एबीसीनिया निवासियों, चेकों, पोलो तथा आक्रमण से पीड़ित अन्य पक्षों को परामर्श दिया कि वे आक्रमण– कारियों के विरूद्ध अहिंसात्मक प्रतिरोध की नीति को अपनाएं । गांधी जी ने चीनियों से कहा कि यदि चीनी लोग उनकी विचारधारा की अहिंसा को अपनाते तो जापान के विनाशकारी नवीनतम यंत्रों का कोई भी उपयोग नहीं रहता। इस प्रकारगांधी जी ने विश्व को अहिंसा का अमोघ अस्त्र दिया, ताकि मानवता की रक्षा हो सके ।उन्होंने विश्वशांति के चिर स्थायी सुझाव दिये ।वे कट्टर राष्ट्रीयता को घातक मानते थे, क्योंकि इससे शांति का हरण होता है। उन्होंने कहा था कि हमें अंतर्राष्ट्रीयवादी बनना होगा। अपनी राष्ट्रीयता के साथ दूसरे की राष्ट्रीयता का भी सम्मान करना होगा जिससे कि युद्ध की संभावनाओं को टाला जा सके।

वास्तव में गांधी ऐसे ही विरले थे, जिन्होंने आत्मत्याग व बलिदान की नई मिसालें प्रस्तुत की और सभी को शांति के मार्ग की और प्रेरित किया। इनके बताये मार्ग पर चलकर विश्व को अशांति व युद्ध के वातावरण से मुक्त किया जा सकता है। वर्तमान युग में हिंसात्मक प्रवृत्तियॉ इतनी प्रबल हो गई हैं कि मानव जाति के समक्ष अस्तित्व का भयंकर संकट उत्पन्न हो गया है ।मनुष्य की राजनीतिक व शक्ति की लालसाओं ने उसे एक भयानक विनाश की ओर धकेल दिया है, जिससे सम्पूर्ण विश्व में अशांति का संकट पैदा हो गया है। वैज्ञानिक उपलब्धियों ने संहारक अस्त्रों को जन्म दिया और संहारक अस्त्रों ने युद्धों को, इन युद्धों ने विश्व को लील लिया है ।

विश्व का प्रत्येक राष्ट्र अपने बजट का अधिकतर भाग आज सैन्य खर्च में लगा देता है । चाहे भारत–पाकिस्तान हो, ईरान–इराक, अमेरिका,लेबनान–इज़राइल, फिलीस्तीन, चीन या जापान सभी राष्ट्र शस्त्रों की होड़ में लगे हुए हैं । आज विश्व के क्षितिज पर हिंसा के बादल मंडरा रहे हैं । विश्व पहले दो महायुद्धों की मार झेल चुका है। इन महायुद्धों में हुई क्षति से कोई भी अपरिचित नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद द्वारा प्रस्तावित शांति प्रस्ताव में शांति के लिए राष्ट्रों को संगठित करने के अनेक मार्ग सुझाये गये । राइट ने शांति को युद्धरहित स्थिति के रूप में परिभाषित किया है।[1]

वहीं गॉलटंग ने शांति की अवधारणा का विस्तार करते हुए शांति की दो धारणा बताई । एक नाकारात्मक शांति व दूसरी साकारात्मक शांति। नाकारात्मक शांति को युद्ध रहित स्थिति मानते हुए इसे साकारात्मक शांति जो कि संस्थात्मक या

संरचनात्मक हिंसा रहित स्थिति है से अलग किया।[2] ब्रुक उटने ने गॉलटंग की परिभाषा को और विस्तृत किया । इन्होंने अच्छे जीवन स्तर के आधार पर संगठित हिंसा में भेद किया । इसके अनुसार यदि युद्ध नहीं हो रहा है लेकिन घरों में महिलाओं व बच्चों के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है या लड़कियों को भोजन, स्वास्थय, कपड़ा उचित मात्रा में प्राप्त नहीं हो पा रहा है या लोगों के राजनीतिक व आर्थिक अधिकारों का भी हनन हो रहा है तो शांति का अस्तित्व खतरे में है। अतः साकारात्मक शांति जीवन की गुणवक्ता में है जहां सभी को भाषण की स्वतन्त्रता हो, शिक्षा का अधिकार हो, समान दृष्टिकोण हो ।[3]

राइट के अनुसार शांति विश्व के एक संतुष्ट संगठन द्वारा उत्पत्तित है। राइट मानते हैं कि शांति वहीं पर अधिक अभिव्यक्त होती है जहां समाज में अनुशासन व न्याय प्रभावी रहता है। यह आंतरिक रूप से उस समाज के सदस्यों में व बाह्य तौर पर यह विभिन्न समुदायों के मध्य संबंधों में प्रकट होती है ।[4]महात्मा गांधी जी ने अपने पत्र 'हरिजन' में लिखा था, ''स्थायी शांति की संभावना में विश्वास न रखना मानव स्वभाव की ईश्वरोन्मुखता पर अविश्वास करना है । शांति की शर्तों के अधूरे सपने पालने से शांति नहीं हो सकती । मानव जाति के जिन माने हुए नेताओं का विनाश के साधनों पर नियंत्रण है, वे उनका पूरी तरह उपयोग करना छोड़ दें, तो ही शांति स्थापित हो सकती है।[5] ''गांधी जी के विचारों में संसार के सभी धर्मों व संस्कृतियों का सार है। गांधी जी ने कहा था और लिखा भी था कि ''मैं कोई नई चीज़ या उपदेश देने नहीं आया हूँ। अवश्य ही मैं इस्लाम को इसी अर्थ में शांति का धर्म मानता हूँ, जिस अर्थ में ईसाई, बौद्ध और हिन्दू धर्म शांति के धर्म हैं। बेशक मात्रा का अंतर है, परन्तु इन धर्मों का उद्देश्य शांति है।[6]''

शांति की महिमा सभी धर्म स्वीकारते हैं । यह मानव जाति को एक सूत्र में बांधने का निश्चय ही सर्वोत्तम साधन है। बुद्ध की करूणा, महावीर की अंहिसा व ईसा के प्रेम पर गांधी जी ने सबसे अधिक बल दिया है । ये शब्द पृथक हैं, पर उनके मूल में एक ही तत्व है– शांति। गांधी जी लोकतंत्र को किसी भी राष्ट्र के लिए आवश्यक मानते थे । वे कहते थे, लोकतंत्र से मेरी कल्पना है कि इस तंत्र में नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का मौका समान रूप से मिले । लेकिन सिवाय शांति के ऐसा कभी नहीं हो सकता ।[7]

अतः दृष्टिगोचर होता है कि परम सुख की उपलब्धि हिंसा में न होकर विश्व शांति में है। शांति के प्रयासों से ही हम विश्व को तनाव व भय के वातावरण से मुक्त कर पायेंगे । हमें एक ऐसे वैश्विक वातावरण की आवश्यकता है, जहां हम अणु व परमाणु बमों के खतरे से दूर एक उन्नत, शांतिपूर्ण, प्रेममय विश्व के सपने को साकार कर सकें ।

संदर्भ ग्रंथ

1. राइट क्विन्सी, ए स्टडी ऑफ वार, यूनिवर्सिटी आफ शिकागो, 1964, पृष्ठ 226. 2. गॉलटंग जोहान, ऑन द मीनिंग ऑफ नॉन वॉयलेंस, जनरल ऑफ पीस रिसर्च, 1965, नं. 2, पृष्ठ 228–30. 3. ब्राइट बुक उटने, एजुकेशन फॉर पीस, न्यूयार्क पेरगमॉन प्रेस, 1985. 4. राइट क्विन्सी, ए स्टडी ऑफ वॉर, यूनिवर्सिटी आफ शिकागो, 1964, पृष्ठ 423. 5. महात्मा गांधी, हरिजन, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद, 18.06.1938. 6. महात्मा गांधी, यंग इंडिया, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद, 20.01.1929. 7. महात्मा गांधी ,हम सब एक पिता के बालक, नवजीवन प्रेस, आवृति 1996, पृष्ठ 181.